पारसमणि

पारसमणि

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

नयी दिल्ली-110002

पारसमणि

यशपाल जैन

प्रकाशक :

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
शफीक मेमोरियल
17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नयी दिल्ली-110002

© भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ : मूल्य : 5.00

पहला संस्करण 1987

मुद्रक :

समीरा प्रिंटिंग प्रेस
कृष्ण नगर
दिल्ली-110051

निवेदन

भारत जैसे देश में, जहां आज भी गरीबी और निरक्षरता बड़े पैमाने पर फैली हुई है, विज्ञान का एक काम यह भी है कि वह आम लोगों के तर्कपूर्ण ढंग से सोचने तथा काम करने की और समय के साथ चलते हुए एक सही फैसले पर पहुंचने की, शक्ति को बढ़ावा दे। कहने की जरूरत नहीं कि विज्ञान महज उद्देश्य नहीं है, बल्कि वह एक दृष्टिकोण है। इसीलिए यह जरूरी है कि लोगों के सोचने-समझने के दृष्टिकोण में आधुनिकता लायी जाए, ताकि वे अपने और अपने आसपास के विकास से जुड़े हुए सवालों पर तर्कपूर्ण नजरिये से विचार करें और खेती तथा उद्योग-धन्धों में विज्ञान एवं तकनीकी से भरपूर लाभ उठा सकें। दरअसल, वैज्ञानिक मिजाज को सही तरीके से समझना और उसे कारगर बनाना आज हमारे देश की एक बड़ी जरूरत है। अगर देश में उन्नति की रफ्तार को तेजी से आगे ले जाना है तो अब विज्ञान और तकनीकी को हर भारतीय के जीवन का एक हिस्सा बनना होगा।

प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी ने भी भारत के वैज्ञानिकों से कहा है कि "देश को 21वीं शताब्दी में ले जाने के लिए हमें आज की जरूरतों के

हिसाब से ही नहीं बल्कि उस समय की जरूरतों को सोचकर अभी से काम शुरू करना होगा। यह बात किसी एक क्षेत्र में नहीं बल्कि कृषि, उद्योग, रक्षा और अन्य सभी क्षेत्रों के अनुसन्धान और विकास योजनाओं पर लागू होती है।" प्रधान मंत्री ने वैज्ञानिकों को इस बात के लिए भी आगाह किया है कि "वे नये उत्पादन तैयार करते समय इस बात का पूरा ध्यान रखें कि उसके कारण पर्यावरण खराब न हो।"

विज्ञान और प्रौद्योगिकी की इसी महत्वपूर्ण भूमिका को ध्यान में रखते हुए भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ ने अन्य महत्वपूर्ण विषयों के साथ ही नवसाक्षर प्रौढ़ पाठकों के लिए विज्ञान एवं तकनीकी विषयों से जुड़े सन्दर्भों पर भी उपयोगी पुस्तकें प्रकाशित करने की दिशा में पहल किया है। यह पुस्तक भी इसी सिलसिले की एक सुखद उपलब्धि है। बड़ी सरल और रोचक भाषा-शैली में अपने विषय को प्रस्तुत करने वाली ये पुस्तकें, निस्सन्देह, अद्वितीय हैं।

अपनी पुस्तक को प्रकाशित करने का अवसर देने के लिए भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ की ओर से हम सभी सहयोगी लेखकों के प्रति आभारी हैं। साथ ही, हम इन पुस्तकों के प्रकाशन में 'एस्पेबे' (एशियन साउथ पैसेफिक ब्यूरो) से मिली सहायता के लिए विनम्र आभारी हैं।

—जे० सी० सक्सेना
महासचिव

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
नई दिल्ली-110002
10 दिसम्बर, 1987

विषय-सूची

पारसमणि : 9
खोटा धन खरा इन्सान : 13
खरी कमाई : 17
प्रेम की निर्मल धारा : 21
आदमी को कितनी जमीन चाहिए : 24
असली सुख : नकली दुःख : 29
काम का सुख : 33
सुख की पहली शर्त : 93
सब को प्रेम करो : 43

पारसमणि

रवीन्द्र नाथ ठाकुर की एक बड़ी ही सीख देने वाली रचना है। एक आदमी को रात में सपने में भगवान दिखाई दिये। उन्होंने उससे कहा कि जाओ, अमुक जगह पर एक साधु रहता है, उससे मिलो। उसके पास एक हीरा है, उसे ले लो। उस आदमी को लगा, भगवान की बात सही हो सकती है। सो अगले दिन उसने सवेरे उठकर उनके बताये स्थान पर साधु की खोज की। संयोग से साधु मिल गये। उसने उन्हें सपने में भगवान के दर्शन देने और उनसे मिल कर हीरा लेने की बात बताई। साधु ने कहा---हां ठीक है। जाओ, वहां नदी किनारे पेड़ के नीचे हीरा पड़ा है, उसे ले लो। आदमी वहां गया और उसके अचरज का ठिकाना न रहा, जब उसने देखा कि पेड़ के नीचे सचमुच बड़ा कीमती हीरा पड़ा है। उसने हीरे को उठा लिया।

खुशी से उसका दिल नाचने लगा।

अचानक उस आदमी के मन में एक विचार पैदा हुआ--साधु ने इसे यों ही क्यों डाल रखा है ? जरूर उसके पास इस हीरे से भी मूल्यवान कोई चीज है, जिसने ऐसी अनमोल चीज को मिट्टी के मोल बना दिया है। यह हीरा तो आज है, कल नहीं। मुझे वही चीज प्राप्त करनी चाहिए, जो हीरे को भी ठीकरा कर देती है। इतना सोच उसने हीरे को नदी में फेंक दिया और साधु के पास चला गया।

यह घटना कवि के दिमाग की कोरी कल्पना नहीं है, इसमें बहुत बड़ी सचाई है। जिसके पास धन से भी कीमती कोई दूसरी चीज होती है, उसे धन फीका लगता है। किसी बुद्धिमान ने ठीक ही लिखा है, "जिसके पास केवल धन है, उससे बढ़कर गरीब और कोई नहीं है।" ऊंचे दर्जे के एक आदमी ने कितनी बढ़िया बात कही है, "मुझसे धनी कोई नहीं है, क्योंकि मैं सिवा भगवान के और किसी का दास नहीं हूं।"

यह जानते हुए भी कि धन-दौलत की आदमी को देखते कोई कीमत नहीं है, आज सभी समाजों में, सभी देशों में, पैसे का बोलबाला है। अमरीका के पास बहुत धन है, पर वह और धन चाहता है। रूस के पास उतना पैसा नहीं है, लेकिन वह चाहता है कि उसके देशवासी खूब खुशहाल हों। यही हाल दूसरे बहुत-से देशों का है। वे सब दिन-रात पैसे की होड़ में दौड़ रहे हैं। जानते हैं,

इसका नतीजा क्या है ? इसका नतीजा यह है कि अमरीका के बहुत-से लोग रोज रात को नींद की दवा लेकर सोते हैं। उनके जीवन में सहजता नहीं है। और जिसके जीवन में उतावली या उलझन है, उसे नींद कहां से आयेगी ?

दुनिया आज हैरान इसीलिए बनी हुई है कि उसका मुँह दौलत की ओर है। यहां दौलत से मतलब सिर्फ रुपये-पैसे से ही नहीं है, सुख-सुविधा की बाहरी चीजों से भी है। ऐसी चीजों के पीछे पड़ने से आदमी को लगता है। कि उसे कुछ मिल रहा है, पर उसकी हालत वैसी ही होती है, जैसा कि रेगिस्तान में भ्रम से दीख पड़ने वाले पानी को देखकर हिरन की होती है। वह उसकी ओर दौड़ता है, पर पानी हो तो मिले ! बेचारा भटक-भटककर प्यासा ही प्राण दे देता है।

हम कह चुके हैं, संसार में जितने साधु, संत, महात्मा और बड़े लोग हुए है, उन्होंने धन से जो कीमती चीज है, उसे पाने की कोशिश की है। उन्होंने अपनी आत्मा को ऊंचा उठाया है, अपनी बुराइयों को दूर करने का प्रयत्न किया है और अपने सामने सदा ऊंचा उद्देश्य रखा है।

सोचने की बात है कि अगर पैसे में और पैसे के वैभव में ही सब कुछ होता, तो भगवान बुद्ध क्यों घर-बार छोड़ते और क्यों भगवान महावीर राजपाट पर लात मारते ? यह तो ढाई हजार बरस की बात हुई। आज के जमाने

में ही हमने गांधीजी को देखा। उन्होंने सारे आडम्बर छोड़ दिये। सादगी का जीवन बनाया और बिताया। वह समझ गये थे कि जो आनंद सादगी की जिंदगी में है, वह पैसे की जिन्दगी में नहीं। वह चाहते तो अच्छी-खासी कमाई कर सकते थे, लेकिन उस हालत में वह गांधी न होते। उन्होंने पैसे का मोह त्यागा और बड़े-बड़े काम किये। दुनिया में उनका नाम अमर हो गया। आपको याद होगा, प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइंस्टीन ने लिखा था--"आगे आने वाली पीढ़ियां मुश्किल से विश्वास कर पायेंगी कि इस धरती पर हाड़-मांस का बना गांधी-जैसा व्यक्ति कभी चलता-फिरता था !"

असल में उन्होंने सोना नहीं जुटाया। उन्होंने वह पारसमणि प्राप्त की जिसको छूकर सब कुछ सोना बन जाता है। जिसके पास ऐसी मणि हो, उसके पास किस चीज की कमी हो सकती है !

लेकिन यह पारसमणि यों ही नहीं मिल जाती। इसके लिए बड़ी साधना की जरूरत होती है। सोना तपने पर कंचन बनता है, ठीक यही बात आदमी के साथ भी है।

हमारे धर्म-ग्रन्थों में कहा गया है कि इस दुनिया में सबसे दुर्लभ आदमी का शरीर है। सारे प्राणियों में आदमी को ऊंचा माना गया है और वह इसलिए कि आदमी के पास बुद्धि है, विवेक है। संसार में जितनी ईजादें हुई है, सब बुद्धि के जोर पर हुई हैं। आप सवेरे दिल्ली में नाश्ता

करके चलते हैं और दोपहर का खाना मास्को में खा लेते हैं। हजारों मील की यात्रा घंटों में हो जाती हैं। यह सब आदमी की बुद्धि से ही सम्भव हुआ है।

जिसके पास इतनी चीज हो, वह धन के या दुनियादारी की चीजों के पीछे भटके, यह उचित नहीं है। बुद्धि का उपयोग उसे बराबर आगे बढ़ने के लिए करना चाहिए। जिन्होंने ऐसा किया है, उन्होंने मानवता की बड़ी सेवा की है। उनका नाम अमर हो गया है □

खोटा धन, खरा इन्सान

धन की खोट आदमी को तब मालूम होती है, जब वह खरा बनने लगता है। खरा बनने के मानी यह नहीं हैं कि इंसान घरबार छोड़ दे, जंगल में चला जाए और भगवान के चरणों में लौ लगाकर बैठे रहे। बहुत-से लोग ऐसा भी करते हैं, पर यह रास्ता सबका रास्ता नहीं है। ज्यादातर लोग तो दुनिया में रहते हैं और उनका वास्ता अपने घर के लोगों से ही नहीं, दूसरों के साथ भी पड़ता है। खरा आदमी वह है, जो अपनी बुराइयों को दूर करता है और

नीति का जीवन बिताते हुए अपने समाज के और देश के काम आता है। ऐसा आदमी सबको प्रेम करता है और सबके सुख-दुख में काम आता है। हजरत मुहम्मद जहां भी दुख होता था, वहां फौरन पहुंच जाते थे। भगवान बुद्ध ने न जाने कितनों की सेवा की। गांधीजी परचुरेशास्त्री के घावों को अपने हाथों से साफ करते थे। ये मामूली घाव नहीं थे, कुष्ठ के थे। उनमें से मवाद निकलता था, लेकिन गांधीजी बड़े प्रेम से शास्त्रीजी की सेवा करते थे। ऐसी मिसालें एक-दो नहीं, सैकड़ों हजारों हैं। जो मानव-जाति की सेवा करता है, उससे बड़ा धनी कोई नहीं हो सकता।

अबू बिन अदम की कहानी शायद आपने सुनी होगी। एक दिन रात को वह अपने कमरे में सो रहा था। अचानक उसकी आंखें खुलीं। देखा कि सामने एक देवदूत बैठा कुछ लिख रहा है। अदम ने पूछा, "आप क्या लिख रहे हैं ?"

उसने जवाब दिया, "मैं उन लोगों के नाम लिख रहा हूं, जो भगवान को प्यारे हैं ?"

अदम थोड़ी देर चुप रहा। फिर बोला, "भैया मेरा नाम उन लोगों में लिख लेना, जो इंसान की सेवा करते हैं ?"

देवदूत चला गया और अगले दिन जब वह लौटा तो उसके हाथ में उन आदमियों की सूची थी, जिन्हें भगवान का आशीर्वाद मिला था। अबू बिन अदम का नाम सूची

में सबसे ऊपर था। साफ है कि जो दूसरों की सेवा करता है,वह भगवान की सेवा करता है।

सेवा करने का अपना आनन्द होता है। एक बार सेवा करने की आदत पड़ जाती है तो फिर छूटती नहीं। जो बिना किसी स्वार्थ के दूसरों की सेवा करता है, उसका मुकाबला कोई नहीं कर सकता। सूरज बिना बदले की इच्छा रखे सबको धूप और रोशनी देता है, चांद ठंडक पहुंचाता है, धरती अन्न देती है, पानी जीवन देता है, हवा प्राण देती है। इनकी बराबरी कौन कर सकता है ?

विनोबा के पास क्या रखा था ? न धन, न कोई बाहरी सत्ता, पर सेवा के जोर पर उन्होंने करोड़ों लोगों के दिलों में अपना घर बना लिया है। उन्हें चालीस लाख एकड़ से ऊपर जमीन दान में मिली। सैकड़ों गांव ग्राम-दान में मिले हैं और जीवन-दानियों की उनके पास फौज रही है। यह सब कैसे हुआ ? सेवा के बल पर। बरसों पहले जब विनोबा ने भूदान-यज्ञ आरंभ किया था, लोगों ने जाने क्या-क्या बातें कही थीं, पर विनोबा ने उनकी कोई परवाह नहीं की। उनका भगवान पर विश्वास था; उनके दिल में कोई स्वार्थ न था। ऐसे आदमी को अपने काम में सफलता मिलनी ही थी। वह हजारों मील पैदल चले। जाड़ों में चले, गर्मियों में चले, वर्षा में चले, धूप में चले। लोगों ने कहा, "बाबा, चलते-चलते बहुत दिन हो गये। थोड़ा आराम कर लो।"

जानते हैं, विनोबा ने क्या जवाब दिया ? उन्होंने कहा, "सूरज कभी रुकता नहीं, चांद कभी टिकता नहीं, नदी कभी थमती नहीं; मेरी भी यात्रा अखण्ड गति से चलेगी।"

सेवा के आनन्द में लीन विनोबा चलते रहे, लगातार चलते रहे। देश का कोई भी कोना उन्होंने नहीं छोड़ा। प्रेम की निर्मल धारा उन्होंने घर-घर पहुंचा दी। एक दिन उनकी टोली में हम कई जने बैठे थे। शाम का समय था। उस दिन विनोबा को बहुत-सी जमीन मिली थी। जब उन्हें दिन भर का हिसाब बताया गया तो वह मुस्कराने लगे। बोले, "आज इतनी जमीन हाथ में आई है, लेकिन देखो, कहीं हाथ में मिट्टी चिपकी तो नहीं !"

हम सब हंस पड़े, पर विनोबा ने बड़े पते की बात कही थी। जिसके हाथों में लाखों एकड़ भूमि आई हो, उसके हाथों में एक कण भी चिपका न रहे, इससे बड़ा त्याग और क्या हो सकता है।

शरीर के दुबले-पतले विनोबा ने हम सब को दिखा दिया कि इंसान से बढ़कर दुनिया में किसी का भी मूल्य नहीं है। आज करोड़पति तक अकिंचन विनोबा के चरणों में सिर झुकाते हैं।

एक सूफी संत ने कहा है, "किसी का दिल उसकी खिदमत करके अपने हाथों में ले, यही सबसे बड़ी इज्जत है। हजारों काबों से एक दिल बढ़कर है।"

गांधीजी ने तो सेवा-धर्म को अहिंसा और सत्य दोनों को बुनियाद माना। उन्होंने कहा, "सेवा-धर्म का पालन किए बिना मैं अहिंसा-धर्म का पालन नहीं कर सकता; और अहिंसा धर्म का पालन किये बिना मैं सत्य की खोज नहीं कर सकता।"

सेवा की बड़ी महिमा है। धन से आप कुछ लोगों को अपनी ओर खींच सकते हैं, सेना से कुछ और ज्यादा पर विजय पा सकते हैं, लेकिन सारी दुनिया को तो सेवक ही जीत सकता है □

खरी कमाई

आप कहेंगे, तुम सेवा की और प्रेम की बातें करते हो। हम भी उन्हें जानते हैं। पर जिन्हें हर घड़ी पेट के लाले पड़े रहते हों, वे कहां से सेवा और कहां से प्रेम करें? उन्हें तो सबसे पहले रोटी चाहिए।

आपकी बात सच है। भूखे को रोटी चाहिए और रोटी उसे हर हालत में मिलनी चाहिए, लेकिन उतने से

आदमी को संतोष होता कहां है। पहली बात तो यह कि आदमी मेहनत नहीं करता, काम से बचता है; दूसरी बात यह कि वह खाने के लिए कम, बचाने के लिए अधिक कमाता है। गांधीजी ने लिखा है, "हर मेहनती आदमी को रोजी पाने का अधिकार है, मगर धन इकट्ठा करने का अधिकार किसी को नहीं है। सच कहें तो धन का इकट्ठा करना चोरी है। जो भूख से अधिक धन लेता है, वह जाने में या अनजाने में दूसरों की रोजी छीनता है।"

आज दुनिया में यही हो रहा है। एक ओर इतनी कमाई है कि आदमी खाकर हजम नहीं कर सकता; दूसरी ओर इतना अभाव है कि आदमी पेट भरकर खा भी नहीं सकता। जहां ढेर होता है वहां गड्ढा अपने आप हो जाता है। एक बुढ़िया की बड़ी मजेदार कहानी है। एक बड़ी गरीब बुढ़िया थी। बेचारी तंगी के मारे हैरान रहती थी। एक दिन किसी ने उससे कहा, "माई, पैसे से पैसा आता है।" वह बेचारी कहीं से एक पैसा जुटा लाई और पैसे के ढेर के पास खड़ी होकर लगी उसे पैसा दिखाने। थोड़ी देर में उसका वह पैसा भी ढेर में चला गया। वह रोने लगी। तब किसी ने उसे समझाया, "तू जानती नहीं, पैसा ढेर में जाता है।"

आज यही बात देखने में आ रही है। कुछ लोग कहते हैं कि अमीरी और गरीबी किस जमाने में नहीं रही। पुराने समय से लेकर अब तक यह भेद चला आ रहा है। सब बराबर कैसे हो सकते हैं ?

इस तर्क में बड़ी भूल है। ईश्वर ने सारे इंसानों को एक-सा बनाया है। आदमी आदमी में कोई अन्तर नहीं रक्खा। अन्तर तो सिर्फ आदमी ने पैदा किया है। एक आदमी दिमाग से काम करता है, दूसरा शरीर से। पहले को हम बड़ा मानते हैं और उसे अधिक पैसा देते हैं, दूसरे को किसान-मजदूर कहकर छोटा मानते हैं और उसकी कम कीमत लगाते हैं। लेकिन यह न्याय नहीं है। जो दिमागी काम करता है, उसे भी खाने को अन्न चाहिए, और अन्न बिना शरीर की मेहनत के नहीं मिल सकता। शरीर से काम करने वाले को दिमागी काम करने वाले का सहारा चाहिए। इस तरह दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। एक के बिना दूसरे का काम नहीं चल सकता।

पर आज का समाज उन्हें एक दूसरे का पूरक या साथी मानता कहां है? बुद्धि से काम करने वाला शरीर की मेहनत को छोटा और ओछा मानता है और उससे बचता है। वह मानता है कि मजदूर से मेहनत लेने का उसे अधिकार है। वह यह नहीं मानता है कि मजदूर के प्रति उसका कोई कर्तव्य भी है। फल यह है कि ईश्वर की दी हुई समानता को आदमी ने न सिर्फ नष्ट कर दिया है, बल्कि आदमी-आदमी के बीच ऊंच-नीच की, छोटे-बड़े की, अमीरी-गरीबी की चौड़ी खाई भी खोद दी है।

गांधीजी इसी खाई को पाटना चाहते थे। उन्होंने राम-राज्य की जो बात कही थी, उसके पीछे यही भावना थी। वह चाहते थे कि एक भी आदमी बिना अन्न के न

पढ़ाई-लिखाई की सुविधा मिले और हारी-बीमारी के लिए दवादारू की व्यवस्था हो; यानी सबको विकास की समान सुविधाएं हों। उनका तो यह तक कहना था कि जब तक एक भी आंख में आंसू है तब तक हमारी लड़ाई की मंजिल पूरी नहीं हो सकती।

यह खाई एकदम दूर हो जाए, तब तो कहना ही क्या। लेकिन आज के जमाने में वह बिल्कुल दूर न हो सके तो कम तो हो ही जानी चाहिए। हमारे समाज की बुनियाद नये मूल्यों पर रक्खी जानी चाहिए। धन को अब तक बहुत प्रतिष्ठा मिल चुकी है, उसकी जगह अब सच्चे इंसान को इज्जत मिलनी चाहिए। बौद्धिक और शारीरिक श्रम के बीच जो दीवार खड़ी हो गई है, वह टूटनी चाहिए। श्रम का शोषण बंद होना चाहिए। हमारे सारे काम इंसान को, गरीबों के उस प्रतिनिधि को, जिसे गांधीजी ने 'दरिद्रनारायण' कहा था, सामने रख कर होने चाहिए। भारत इसीलिए भारत बना रहा कि उसने इंसानियत को ऊंची जगह दी। मानवता को वही मान देने का अब समय आ गया है।

कहने का मतलब यह कि हर आदमी अपनी क्षमता के अनुसार काम करे और जरूरत के अनुसार पाये; कोई किसी का शोषण न करे, न अपना होने दे; सब अपने-अपने कर्त्तव्य को जानें और मानें कि अधिकार तो कर्त्तव्य में से रहे, सबको पहने को कपड़े और रहने को घर मिले, सबको अपने-आप आते हैं; सब सादगी से रहें और सबके बीच

प्रेम का अटूट नाता हो । जब समाज की बुनियाद इन पक्के आधारों पर रखी जाएगी तो हमारे सारे दुख और क्लेश, अभाव और भेद, अपने आप दूर हो जाएंगे । तब आदमी धन और सत्ता, प्रभुत्व और वैभव---किसी के नीचे नहीं रहेगा, बल्कि उन सबके ऊपर रहेगा । मानव को इतना मान मिलेगा तो प्रभु ईसा के शब्दों में धरती पर स्वर्ग उतरते देर नहीं लगेगी □

प्रेम की निर्मल धारा

सेवा के लिए पहली शर्त प्रेम है, अर्थात् जिसके दिल में प्रेम है, वही सेवा कर सकता है । टॉल्स्टाय ने कहा है, "प्रेम स्वर्ग का रास्ता है ।" बुद्ध का कहना है, "प्रेम इंसानियत का नाम है ।" ईसा ने कहा है, "प्रेम संसार की ज्योति है ।" विक्टर ह्यूगो का कहना है, "जीवन एक फूल है और प्रेम उसका मधु ।"

रामकृष्ण परमहंस ने कहा है, "प्रेम अमरता का सागर है ।" कबीर का कथन है, "जिस घट में प्रेम नहीं,

उसे मरघट समझ---बिना प्राण के सांस लेने वाली लुहार की धौंकनी।"

अलग-अलग शब्दों में सभी महापुरुषों ने प्रेम का बखान किया है। वास्तव में प्रेम मानव-जाति की बुनियाद है। प्रेम ऐसा चुम्बक है, जो सबको अपनी ओर खींच लेता है। जिसके हृदय में प्रेम है, उसके लिए सब अपने हैं। भारतीय संस्कृति में तो सारी पृथ्वी को एक कुटुम्ब माना गया है--वसुधैव कुटुम्बकम्।

जो सबको प्रेम करता है, उससे बड़ा दौलतमंद कोई नहीं हो सकता। वह दूसरे के दिल में ऊंची भावना पैदा कर देता है। आप जानते हैं, आदमी का भूमि से कितना मोह होता है। कौरवों ने कहा था कि हम पांडवों को सुई की नोंक के बराबर भी जमीन नहीं देंगे; लेकिन विनोबा के प्रेम ने लाखों एकड़ भूमि इकट्ठी करा दी। उन्होंने लोगों से यह नहीं कहा कि मुझे जमीन दो। नहीं दोगे तो कानून से या जोर-जबरदस्ती से तुम्हारी जमीन को छिनवा दूंगा। जिसका हृदय प्रेम से सराबोर हो, वह ऐसी भाषा कैसे बोल सकता था? उन्होंने कहा, "मेरे प्यारे भाइयो, मैं तुम्हारे घर पर आया हूं। तुम्हारे पांच बेटे हैं, छठा होता तो उसका भी लालन-पालन करते न! मुझे अपना छठा बेटा मान लो और मेरा हिस्सा मुझे दे दो।"

विनोबा का यह प्रेम ही था, जिसने लोगों के दिलों को मोम बना दिया। किसी-किसी ने तो अपनी सारी-की-सारी जमीन उनके चरणों में रख दी। प्रेम के इतने बड़े

चमत्कार की घटनाएं हम किताबों में पढ़ते हैं, पर आज के युग में विनोबा ने उसे सामने करके दिखा दिया।

जिसका हृदय निर्मल है, उसी में ऐसे महान् प्रेम का निवास रहता है। वैसे तो हम रोज प्रेम करते हैं; अपने बच्चों के, अपने सम्बन्धियों के, अपने मित्रों के प्रति प्रेम का व्यवहार करते हैं, लेकिन बारीकी से देखा तो वह असली प्रेम नहीं है। हमारे प्रेम में कर्तव्य की थोड़ी-बहुत भावना रहती है; पर साथ ही यह स्वार्थ भी कि हमारे बच्चे बड़े होकर हमारे बुढ़ापे का सहारा बनेंगे। सगे-संबंधी मुसीबत में काम आएंगे। अगर हमें यह भरोसा हो जाय कि हमारा काम दूसरों के बिना भी चल जाएगा, तो सच मानिये, हमारे प्रेम का बर्तन बहुत कुछ खाली हो जाएगा। ऐसा प्रेम हमारे जीवन में छोटी-मोटी सुविधाएं पैदा कर सकता है, पर दुनिया को बांध नहीं सकता।

असली प्रेम तो वह है, जिसमें किसी प्रकार की बदले की भावना न हो। इतना ही नहीं, उसमें विरोधी के लिए भी जगह हो। गर्मी से व्याकुल होकर हम जाने कितनी बार सूरज को कोसते हैं, पर सूरज कभी हम पर नाराजगी दिखाता है? हम धरती को रोज पैरों से दबाते हुए चलते हैं, पर वह कभी गुस्सा होती है? जरा गरम हवा आती है तो हम कहते हैं--मार डाला कम्बख्त ने! हमारी गाली का हवा कभी बुरा मानती है? यदि गुस्सा होकर सूरज धूप और रोशनी न दे, धरती अन्न न दे, तो सोचिये, हम लोगों की क्या हालत होगी?

पर दुनिया उन्हें कितना ही भला-बुरा कहे, वे अपने धर्म को नहीं छोड़ सकते। उनके प्रेम में तनिक भी अन्तर नहीं पड़ सकता, क्योंकि उनके प्रेम के पीछे किसी प्रकार का स्वार्थ नहीं है। वे प्रेम इसीलिए देते हैं कि बिना दिये रह नहीं सकते। यही है वास्तविक प्रेम।

ऐसे प्रेम का वरदान बिरलों को ही मिलता है; पर जिन्हें मिलता है, वे अपने को बड़भागी बना जाते हैं, दुनिया को धन्य कर आते हैं□

आदमी को कितनी जमीन चाहिए ?

रूस में एक बहुत बड़े लेखक हुए हैं, इतने बड़े कि सारी दुनिया उन्हें जानती है। उनका नाम था लियो टॉल्स्टाय, पर हमारे देश में उन्हें महर्षि टॉल्स्टाय कहते हैं। उन्होंने बहुत-सी किताबें लिखी हैं। इन किताबों में बड़ी अच्छी-अच्छी बातें हैं। उनकी कहानियों का तो कहना ही क्या। एक-से-एक बढ़िया हैं। उन्हें पढ़ते-पढ़ते जी नहीं भरता।

इन्हीं टाल्स्टाय की एक कहानी है---"आदमी को

कितनी जमीन चाहिए ?" इस कहानी में उन्होंने यह नहीं बताया कि हर आदमी की अपनी गुजर-बसर के लिए कितनी जमीन की जरूरत है। उन्होंने तो दूसरी ही बात कही है। वह कहते हैं कि आदमी ज्यादा-से-ज्यादा जमीन पाने की कोशिश करता है, उसके लिए हैरान होता है, भाग-दौड़ करता है, पर आखिर में कितनी जमीन उसके काम आती है ? कुल छह फुट, जिसमें वह हमेशा के लिए सो जाता है।

यों कहने को यह कहानी है, पर इसमें दो बातें बड़े पते की कही गई हैं। पहली यह कि आदमी की इच्छाएं कभी पूरी नहीं होतीं। जैसे-जैसे आदमी उनका गुलाम बनता जाता है, वे और बढ़ती जाती हैं। दूसरे, आदमी इतनी आपाधापी करता है, भटकता है, पर अन्त में उसके साथ कुछ भी नहीं जाता।

अपको शायद मालूम न हो, यह कहानी गांधीजी को इतनी पसन्द आई थी कि उन्होंने उसका गुजराती में अनुवाद किया। हजारों कापियां छपीं और लोगों के हाथों में पहुंचीं। धरती के लालच में भागते-भागते जब आदमी मरता है तो कहानी पढ़ने वालों की आंखें गीली हो आती हैं। उनका दिल कह उठता है---"ऐसा धन किस काम का !"

अपनी इस कहानी में टाल्स्टाय ने जो बात कही है, ठीक वही बात हमारे साधु-संत, और त्यागी-महात्मा सदा से कहते आये हैं। उन्होंने कहा है कि यह दुनिया एक

माया-जाल है। जो इसमें फंसा कि फिर निकल नहीं पाता। लक्ष्मी यानी धन-दौलत को उन्होंने चंचला माना है। वे कहते हैं, "पैसा किसी के पास नहीं टिकता। जो आज राजा है, वही कल को भिखारी बन जाता है।"

आदमी इस दुनिया में खाली हाथ आता है, खाली हाथ जाता है। किसी ने कहा है न :

आया था यहां सिकन्दर, दुनिया से ले गया क्या ?
थे दोनों हाथ खाली, बाहर कफन से निकले।

संत कबीर ने यही बात दूसरे ढंग से कही है :

कबीर सो धन संचिये, जो आगे से कूं होइ।
सीस चढ़ाये पोटली, जात न देखा कोइ॥

उर्दू के मशहूर कवि नजीर ने जो कहा है, वह तो बच्चे-बच्चे की जबान पर है :

सब ठाठ पड़ा रह जाएगा, जब लाद चलेगा बंजारा।

एक मुसलमान संत ने तो यहां तक कहा है, "ए इंसान, दौलत की ख्वाहिश न कर। सोने में गम का सामान है, उसकी मौजूदगी में मुहब्बत खुदगर्ज और ठंडी हो जाती है। घमंड और दिखावे का बुखार चढ़ जाता है।"

आप कहेंगे, "वाह जी वाह, आपने तो इतनी बातें कह डालीं। पर मैं पूछता हूं कि बिना धन के किसका काम चलता है ? साधु-संतों की बात छोड़ दीजिये, लेकिन जिसके घर-बार है, उसे खाने को अन्न चाहिए, पहनने को कपड़े

और रहने को मकान चाहिए। इसके अलावा पढ़ाई-लिखाई, हारी-बीमारी आदि बीसियों बातों के लिए पैसा चाहिए। और, आप क्या जानते नहीं, जिसके पास पैसा है, उसी की लोग इज्जत करते हैं, गरीब को कोई नहीं पूछता।"

"आपकी बात में सचाई है। पर एक बात बताइये--आप रोटी खाते हैं ?"

"जी हां। सभी खाते हैं।"

"किस लिए ?"

"पेट भरने के लिए।"

"जानवर खाते हैं ?"

"जी हां।"

"किसलिए ?"

"पेट भरने के लिए।"

"ठीक। अब मुझे यह बताइये कि जब आदमी और जानवर दोनों पेट भरने के लिए खाते हैं तो फिर दोनों में अंतर क्या है ?"

"यह भी आपने खूब कही ! साहब, आदमी आदमी है, जानवर जानवर !"

"यह तो मैं भी जानता हूं, पर मेरा सवाल तो यह है कि उन दोनों में अन्तर क्या है ?"

"अन्तर ! अन्तर यह है कि जानवर खाने के लिए जीता है, आदमी जीने के लिए खाता है।"

वाह, आपने तो मेरे मन की ही बात कह दी। यही तो मैं कहना चाहता था। जब आदमी जीने के लिए खाता है, तब उसके जीवन का कोई उद्देश्य भी होना चाहिए। सच यह है कि वह उद्देश्य धन कमाना नहीं हो सकता। धन कमाने का मतलब होता है पेट के लिए जीना; और जो पेट के लिए जीता है, उसका पेट कभी नहीं भरता। आदमी तिजोरी में भरी जगह को नहीं देखता। उसकी निगाह खाली जगह पर रहती है। इसी को "निन्यानबे का फेर" कहते हैं। स्वामी रामतीर्थ ने एक बड़ी सुन्दर कहानी लिखी है। एक धनी आदमी था। वह और उसकी स्त्री, दोनों हर घड़ी परेशान रहते थे और अक्सर आपस में लड़ते थे। उनका पड़ोसी गरीब था, दिन-भर मजूरी करता था। औरत घर का काम करती थी। रात को दोनों चैन की नींद सोते थे। एक दिन धनी की स्त्री ने कहा, "इन पड़ोसियों को देखो, कैसे चैन से रहते हैं।" आदमी ने कहा, "ठीक कहती हो।"

अगले दिन उसने किया क्या कि एक पोटली में निन्यानवे रुपये बांधे और उसे गरीब के घर में डाल दिया। पड़ोसी ने रुपये देखे। उसकी आंखें चमक उठीं। उसी घड़ी लोभ ने उसे दबोचा। वह निन्यानवे के सौ और सौ के हजार करने में लग गया। फिर क्या था। उसकी नींद हराम हो गई, सुख भाग गया।

हममें से ज्यादातर लोग ऐसे ही चक्कर में पड़े हैं। हम यह भूल जाते हैं कि इस चक्कर में कहीं कोई सुख है तो

वह नकली है। सुख से अधिक दुख है। असल में पैसा अपने-आपसे बुरा नहीं है। बुरा है उसका मोह। बुरा है उसका संग्रह। रोजी पाने का अधिकार सबको है, पर पैसा जोड़-कर रखने का अधिकार किसी को भी नहीं है।

आचार्य विनोबा ने बड़ी सुंदरता से यह बात कही है, "धन को धारण करने पर वह निधन (मृत्यु) का कारण बन जाता है। इसलिए धन को 'द्रव्य' बनाना चाहिए। जब धन बहने लगता है, तभी वह द्रव्य बनता है। द्रव्य बनने पर धन धान्य बन जाता है।"

गांधीजी के शब्दों में, "सच्ची दौलत सोना-चांदी नहीं, बल्कि स्वयं मनुष्य ही है। धन की खोज धरती के भीतर नहीं, मनुष्य के हृदय में ही करनी है।"

जिस समाज और देश के पास इंसान की दौलत है, उसका मुकाबला कौन कर सकता है□

असली सुख : नकली दुःख

इस दुनिया में सब सुखी रहना चाहते हैं। चाहे कोई बड़ा हो या छोटा, अमीर हो या गरीब, मालिक हो या नौकर,

सबकी इच्छा होती है कि उनके दिन सुख से बीतें। सुखी होने के लिए लोग अपने-अपने ढंग से जतन भी करते हैं। कोई पैसे जोड़ता है, कोई जायदाद खरीदता है, कोई मकान बनाता है, पर सच यह है कि इस धरती पर कोई भी ऐसा प्राणी नहीं है, जिसे पूरी तरह सुखी कहा जा सके। जिसके पास धन है, वह दुःखी है; जिसके पास धन नहीं है, वह हैरान है; जिसके पास काम है, वह तंग है; जो बेकार है, वह परेशान है। कहने का मतलब यह कि हरेक के सामने कोई-न-कोई अभाव या कठिनाई है, जो सुख के स्वाद को फीका बनाती है।

यह सब है; लेकिन असल बात यह है कि हममें से अधिकांश लोग जानते ही नहीं कि सच्चा सुख क्या है और वह कहां और कैसे मिल सकता है ?

आज सौ में निन्यानबे आदमी बाहरी चीजों में सुख खोजते हैं। उन्हें लगता है कि उनके पास धन होगा, उनके पास पद होगा तो उन्हें किसी प्रकार की कमी नहीं रहेगी और उनका जीवन आराम से बीतेगा। लेकिन वह यह भूल जाते हैं कि धन बहते पानी की तरह है। लक्ष्मी को चंचल कहा गया है। वह किसी एक के पास नहीं टिकती। आज जो राजा है वह कल भिखारी हो जाता है। यदि ऐसा न होता तो महावीर और बुद्ध क्यों राजपाट त्याग देते ? गांधीजी क्यों अकिंचन बनते ? वे जानते थे, धन का सुख क्षणिक है और जो धन के चक्कर में पड़ता है, वह सारी जिन्दगी भटकता रहता है। उसकी

हालत मकड़ी के जाल में फंसी मक्खी की तरह होती है। वह जितना निकलने को जोर लगाती है, उतनी ही और फंसती है।

कलकत्ते के एक मित्र बड़े पते की बात कहा करते हैं। कहते हैं, शुरू-शुरू में उनकी इच्छा हुई कि उन्हें पचास रुपये महीने की नौकरी मिल जाए तो आगे वह कुछ नहीं चाहेंगे। पचास की नौकरी मिल गई तो सौ की इच्छा हुई। सौ के बाद ढाई सौ की। अन्त में उन्होंने तय किया कि हजार रुपये महीने की आमदनी हो, पर उनकी चाह वहां भी नहीं रुकी। आज वह लखपती हैं, उनके मकान हैं, मोटरें हैं, पर रात-दिन उन्हें चिन्ता है कि करोड़पति कैसे बनें!

मित्र की बात सोलह आने सही है। निन्यानबे के फेर में पड़कर निकलना आसान नहीं होता। इसीलिए चतुर आदमियों ने कहा है कि जिस तरह नाव में पानी आने पर दोनों हाथों से उलीचकर उसे निकाल देते हैं, वैसे ही धन के साथ करना चाहिए।

पद या ओहदा भी किसी के पास सदा नहीं रहते। दुनिया के इतिहास में एक-से-एक बढ़कर राजा और सम्राट् हुए हैं। आज उनके नाम इतिहास के पन्नों में छिपे पड़े हैं। कौन उन्हें जानता है? कौन उन्हें मानता है? उनकी बादशाहत खत्म हुई कि वे गये।

धन से थोड़ा-बहुत सहारा मिल जाता है, पद से थोड़ी-बहुत सुविधा हो जाती है; पर उन पर सुख की इमारत

बनाना बालू पर मकान बनाने की तरह है।

कुछ लोग कहते हैं, सुख चाहते हो तो मौज से रहो। खाओ-पीयो और चैन की बंसी बजाओ। जितने आराम के साधन होंगे, जितना वैभव होगा, उतना ही सुख मिलेगा। जिसके पास खाने को अन्न नहीं, रहने को मकान नहीं, पहनने को कपड़ा नहीं, वह सुखी कैसे होगा ?

जो लोग ऐसा कहते हैं, वे एक बुनियादी भूल करते हैं। भोग की इच्छा भोग से कभी पूरी नहीं होती। जिस तरह आग में घी डालने से वह और भड़कती है, उसी तरह भोगों में पड़ने से भोग की इच्छा और भी तीव्र बनती है।

इस सचाई को समझकर ही हमारे सन्तों ने और महापुरुषों ने कहा कि असली सुख त्याग में है, भोग में नहीं; असली सुख संयम में है, असंयम में नहीं। जो भोग की आदतों के दास बने हैं, वे बरबाद हो गये हैं। जिन्होंने उसका त्याग किया है, वे ऊपर उठे हैं।

इस तरह हमने देखा कि सुख की कुंजी बाहरी साधनों में नहीं है। धन की अपनी जगह है, ओहदों का अपना महत्व है, भोगों का अपना आकर्षण है; लेकिन इनमें से कोई भी सुख नहीं है। सुख के ऐसे फूल नहीं कोई खिला सकता, जो कभी मुरझाए ही नहीं।

दुनिया में ज्यादातर लोग नकली सुख के पीछे पड़े हैं। जिस तरह रेगिस्तान में थोड़ी-थोड़ी दूर पर पानी का

भ्रम होता है और प्यासा आदमी उसे असली पानी समझ कर उसके पीछे भटकता रहता है, वही हालत हम सबकी हो रही है। हम बाहरी चीजों के पीछे पड़े हैं और छाया को पकड़कर भाग रहे हैं कि सार हमारे हाथ में आ गया है□

काम का सुख

कुछ लोग कहते हैं कि सुखी होने के लिए जरूरी है कि आदमी काम का बोझ अपने ऊपर न ले। यह बात बिल्कुल सही है, पर इसका मतलब तो केवल इतना है कि हम काम करें, पर उसे बोझ न मानें।

बहुत-से लोग आलस में अपना समय बिता देते हैं। वे काम को टालते रहते हैं। ऐसे आदमियों से बढ़कर दुःखी और कोई नहीं होता। काम करने से मनुष्य को जो आनन्द मिलता है, उत्साह बढ़ता है, उससे वे वंचित रहते हैं। जिस तरह मशीन को चालू न रखने से उसमें जंग लग जाता है और वह बेकार हो जाती है उसी तरह हाथ पैर के

न हिलाने से वे बेकार हो जाते हैं। काम करने का अभ्यास छूट जाने पर छोटे-से-छोटा काम भी भारी मालूम होता है।

जो आदमी काम को टालता रहता है, उसके सामने बहुत-से काम इकट्ठे हो जाते हैं। वह सोचता है कि इतने काम मैं कैसे कर सकता हूं। वह काम से बचने के बहाने बनाता है, झूठ बोलता है और इससे वह बहुत-से दुर्गुणों के पंजे में फंस जाता है।

कुछ लोग कामों को छोटा-बड़ा करके देखते हैं। हम बोझा कैसे उठाएं? यह तो पढ़े लिखे आदमी का काम नहीं है, मजदूर का है। घर में झाड़ू कैसे लगाएं, बर्तन कैसे साफ करें? यह सब तो नौकर का काम है! हमने पढ़ा-लिखा है, हमें बड़े-बड़े काम करने चाहिए। ऐसा सोचना अपने पैरों पर आप कुल्हाड़ी मारना है। इस दुनिया में कोई भी काम छोटा नहीं है, कोई भी काम बड़ा नहीं है, किसान खेत में अन्न पैदा करता है। बिना अन्न के हमारा जीवन नहीं चल सकता। जुलाहा कपड़े बुनता है। हम बिना कपड़े के नहीं रह सकते। राज घर बनाता है। बिना घर के रहना हमारे लिए कहां संभव है! जो हमें जिन्दगी की इतनी जरूरी चीजें देते हैं, उन्हें हम छोटा कैसे समझ सकते हैं? उनके काम का उतना ही महत्व है, जितना हमारे दिमागी काम का; बल्कि यह कहा जाय कि उनके काम का ज्यादा महत्व है तो गलत नहीं होगा। दिमागी चीजों के बिना हम जिन्दा रह सकते हैं। पर अन्न

के बिना हमारी गुजर होना असम्भव है।

सुखी जीवन के लिए जरूरी है कि हम काम करें, किसी काम को छोटा न समझें और जो कुछ करें, अपना कर्त्तव्य मानकर करें।

बाइबिल में कहा गया है कि कर्म पूजा है और गीता कहती है, काम करो फल की आशा मत रखो। ये दोनों बातें एक ही हैं। बाइबिल में जो कहा गया है, उसका अर्थ यह है कि हर आदमी को काम करना चाहिए, लेकिन काम के साथ यह भावना नहीं रखनी चाहिए कि हम किसी पर अहसान कर रहे हैं। काम करना हमारा धर्म है और धर्म करके हम किसी के साथ उपकार नहीं करते।

दूसरे, काम करने वाले में काम का अहंकार नहीं होना चाहिए। बहुत से लोग कहा करते हैं, यह काम मैंने किया है, वह काम मैंने किया है, अर्थात् उनके काम के साथ अहंकार जुड़ा रहता है। इसका नतीजा अच्छा नहीं होता। उसके काम की अच्छाई पर पर्दा पड़ जाता है। जिस तरह पूजा करने में आदमी विनम्र रहता है, वैसे ही काम करने में रहना चाहिए।

गीता के कथन का भी लगभग यही आशय है। काम करो, क्योंकि तुम्हें ईश्वर ने हाथ दिये हैं। पर फल की आशा मत करो; क्योंकि वह तुम्हारे हाथ की बात नहीं है। फिर एक बात यह भी है कि जो फल की आशा से काम करते हैं, वे फल न मिलने पर निराश होते हैं और काम

पर से उनकी आस्था हट जाती है। वे समझते हैं कि पेड़ लगाने से लाभ क्या, अगर उससे फल नहीं मिलते।

काम करने का अपना आनंद होता है और वह काम का सबसे बड़ा पुरस्कार है। काम करो, पूरे उत्साह से करो, प्रसन्नता से करो, मेहनत से करो, फल जरूर मिलेगा। लोगों ने चट्टानों पर कुएं खोदे हैं और पानी निकाला है, रेगिस्तान में खेती की है और अन्न पाया है। विवेक और मेहनत से किया गया कोई भी काम बेकार नहीं जाता।

कुछ लोग काम करते तो हैं, पर उन्हें काम में आनन्द नहीं आता। ऐसे आदमियों के लिए काम बोझ होता है, सुख नहीं देता। गाते हुए मजदूर जब सड़क पर पत्थर तोड़ते हैं और गाते हुए किसान जब खेत में अनाज बोते हैं तो पता भी नहीं चलता कि कब उनका काम पूरा हो गया।

इसलिए जरूरी है कि हम जो भी काम करें, पूरे रस के साथ करें। उससे भारी-से-भारी काम भी फूल-सा हल्का हो जाता है।

कुछ लोग काम का संबंध पैसे से जोड़ते हैं। कहते हैं, जैसा गुड़ डालोगे, वैसे मीठा होगा। यह भावना बड़ी दोष-पूर्ण है। काम का मूल्य पैसे से नहीं आंका जा सकता।

संत तिरुवल्लुवर के जीवन की एक घटना है। वह ऊंचे दर्जे के संत थे। कपड़ा बुनकर अपनी जीविका चलाते थे।

एक दिन एक शरारती लड़के ने उन्हें हैरान करने की सोची। वह उनके पास गया और एक साड़ी लेकर उसका दाम पूछा। उनके दो रुपये कहने पर उसने साड़ी के दो टुकड़े कर डाले और बोला कि मुझे आधी चाहिए। इसका दाम क्या होगा ? संत ने शांत भाव से कहा--एक रुपया। लड़के ने आधी साड़ी के फिर दो टुकड़े कर डाले और उनमें से एक को उन्हें दिखाकर पूछा और इसका ? उन्होंने कहा--आठ आना।

युवक साड़ी के टुकड़े-पर-टुकड़े करता गया और दाम पूछता गया। उसे साड़ी तो लेनी थी नहीं। वह तो संत को हैरान करके यह देखना चाहता था कि वह गुस्सा होते हैं या नहीं।

जब साड़ी के बहुत-से टुकड़े हो गये तो युवक बोला, "अब ये टुकड़े मेरे किस काम आएंगे ? मैं इन्हें नहीं खरीद सकता।"

संत ने मुस्कराते हुए कहा, "तुम ठीक कहते हो, बेटे। ये टुकड़े किसी काम नहीं आ सकते।"

इस पर युवक अपनी करनी पर लज्जित हुआ। बोला, "यह लो दो रुपये। मैं पूरी साड़ी का दाम तुम्हें दिये देता हूं।"

पर संत ने पैसे नहीं लिये। युवक बोला, "मेरे पास बहुत पैसे हैं। तुम गरीब हो। मैंने तुम्हारी चीज खराब कर दी। मुझे उसका घाटा पूरा करना ही चाहिए।"

सन्त ने बड़ी गम्भीरता से कहा, "घाटा ? क्या तुम इसका घाटा पूरा कर सकते हो ? क्या तुम समझते हो कि रुपये से यह घाटा पूरा हो जाएगा ? सैकड़ों किसानों की मेहनत से कपास पैदा हुई। उसकी रुई से मेरी घरवाली ने सूत काता। मैंने उस सूत को रंगा और करघे पर उसे बुनकर साड़ी तैयार की। कोई इस साड़ी को पहने तभी हमारी मेहनत कारगर होगी और हमें सुख मिलेगा। तुमने इसे फाड़कर टुकड़े-टुकड़े कर दिये। इतने लोगों की मेहनत बेकार गई। कुछ चांदी के टुकड़ों से यह घाटा कहीं पूरा हो सकता है ?

सन्त ने बड़ी ऊंची बात कही। मेहनत का ऐवज पैसा में नहीं दिया जा सकता। इसका मतलब यह नहीं कि आदमी के काम के लिए पैसा नहीं मिलना चाहिए। जरूर मिलना चाहिए और पूरा मिलना चाहिए; लेकिन पैसे के कारण काम दिल और मेहनत से न करना बुद्धिमानी नहीं है। आधे मन से काम करके आदमी को स्वयं सन्तोष नहीं होता और यह उसकी अपनी बहुत बड़ी हानि है। जो काम को अच्छी तरह से करता है, उसे आंतरिक सुख मिलता है□

सुख की पहली शर्त

सुखी होने के लिए सबसे पहली चीज प्रसन्नता है। जिस प्रकार बहुत अधिक बोझ उठाकर आदमी दूर तक नहीं जा सकता, उसी प्रकार मन पर चिन्ताओं का भार रखकर कोई भी सुखी नहीं हो सकता। किसी ने ठीक कहा है, मनुष्य के जीवन के तीन सबसे बड़े शत्रु हैं--दुःख, चिन्ता और हर। लेकिन जो डर घड़ी प्रसन्न रहता है, उसके पास आने की ये हिम्मत नहीं कर सकते।

एक विद्वान का कथन है, प्रसन्नता ईश्वर की दी हुई एक ऐसी नियामत है, जिसका उपयोग सबको करना चाहिए। प्रसन्नता के तेल से जीवन की सारी काई साफ हो जाती है।

शेक्सपीयर ने लिखा है, हल्का दिल बहुत दिन जीवित रहता है। सर वाल्टर स्काट बहुत ही सुखी

आदमी माना जाता था। क्यों ? इसलिए कि वह हर घड़ी प्रसन्न रहता था। हर किसी के लिए उसके चेहरे पर सदा मुस्कुराहट खेलती रहती थी। इससे सब आदमी उसे प्यार करते थे और जिसे सब प्यार करते हों, उससे बढ़कर सुखी कौन हो सकता है ?

प्रसन्नता ऊपरी उल्लास नहीं है, वह तो अंदर से उठकर आती है। उसका स्रोत इतना गहरा होता है कि वह कभी खाली नहीं होता।

प्रसन्नता वह शक्ति है, जो आदमी को सब कुछ हंसते-हंसते सहन करने की ताकत देती है। गांधीजी को ही लें। वह कितने बड़े-बड़े काम करते थे, कितनी बड़ी-बड़ी समस्याएं उनके सामने आती थीं; लेकिन उनका मन हमेशा फूल की तरह खिला रहता था। भारी-से-भारी तूफानों का सामना वह अपने चित्त की प्रफुल्लता के कारण सहज ही कर लेते थे।

ऐसी प्रसन्नता के लिए जरूरी है कि आदमी का मन और हृदय भरे-पूरे हों। जहां अभाव होता है, वहां दुःख आकर बस जाता है। इसलिए वही मनुष्य सुखी होता है, जो कभी कोई कमी अनुभव नहीं करता।

दुनिया में ऐसे लोगों की कमी नहीं, बल्कि बहुतायत है, जो हर घड़ी अपने भाग्य को कोसते रहते हैं, ईश्वर को गाली देते रहते हैं—हाय, उसे देखो, मोटर में मजे से घूमता है, हमें तांगा भी नसीब नहीं। उसके पास इतनी

बड़ी कोठी है, हमारे पास झोंपड़ी भी नहीं । ऐसी और बहुत सी शिकायतें करके लोग अपने को दुःखी बनाये रखते हैं । ऐसे लोगों के जीवन का रस धीरे-धीरे सूखता रहता है और अंत में वह दिन आ जाता है, जबकि उन्हें अपने सामने मुसीबतों का पहाड़ दिखाई देता है । उनकी हालत उस दिवालिये जैसी हो जाती है, जो अपने को चारों ओर से कर्जदारों से घिरा पाता है ।

आप कह सकते हैं कि आज के जमाने में आदमी को इतनी फिक्र है कि उसके मन पर वह भारी चट्टान-सी रखी रहती है । प्रसन्नता के लिए बेफिक्री चाहिए, जो बिरलों के भाग्य में ही बदी होती है ।

आपकी बात ठीक है, पर आप यह भी तो सोचिये कि चिन्ता अपना घर वहाँ तो बना सकती है जहाँ घर बनाने की गुजाइश होती है । प्रसन्नता के सामने तो वह ठहर भी नहीं सकती । उसे देखकर ऐसे भागती है, जैसे सूर्य को देखकर अंधेरा भागता है ।

प्रसन्नता आदमी के लिए उतनी ही सहज बन जानी चाहिए, जितना सांस लेना । ऐसा हुआ कि फिर क्या कहने ! मनुष्य को तब किसी से भी डर नहीं रहता और वह ऐसे सुख का वरदान पा लेता है, जिसे दुनिया की कोई भी ताकत छीन नहीं सकती । ऐसा आदमी फूल-जैसा हल्का रहता है और हर घड़ी प्रसन्नता के पंखों पर उड़ता रहता है । सुख उसका कभी अलग न होने वाला साथी बन जाता है ।

किसी ने सत्य कहा है :

जब तुम हंसते हो, दुनिया तुम्हारे साथ हंसती है ।

जब तुम रोतें हो तो अकले रोते हो ।

दुनिया का नियम है कि दुःख में साथ देने वाले कम होते हैं । प्रसन्नता चुम्बक की भांति होती है, जो दूसरों को अपनी ओर खींचती है ।

महान् दार्शनिक गेटे का कहना है कि मन और शरीर में गहरा और कभी न टूटने वाला संबंध है । यदि मन प्रसन्न है तो शरीर स्वस्थता और स्वतंत्रता अनुभव करता है । प्रसन्नता से बहुत-से पाप भाग जाते हैं ।

एक दूसरे महापुरुष का कथन है, "प्रसन्नता वसंत की तरह दिल की सारी कलियां खिला देती है ।"

गीता में तो यहाँ तक कहा गया है, "चित्त के प्रसन्न होने से सब दुःख नष्ट हो जाते हैं । जिसका चित्त प्रसन्न और निर्मल हो गया है उसकी बुद्धि शीघ्र स्थिर हो जाती है ।"

सब को प्रेम करो

सुखी रहने के लिए जितनी प्रसन्नता जरूरी है, उतना ही जरूरी है सबको प्रेम करना। जो सबको प्रेम करता है, उसका कोई शत्रु नहीं होता। जिसके कोई शत्रु नहीं, उससे बढ़कर कौन सुखी हो सकता है !

पर सबको प्रेम करना आसान नहीं है। जिसे हम चाहते हैं जो हमें अच्छा लड़ता है, उसे हम प्रेम करते हैं। लेकिन बारीकी से देखा जाय तो यह असली प्रेम नहीं है। असली प्रेम तो तब माना जाएगा, जबकि हम अपने विरोधी और दुश्मन के साथ भी प्रेम का व्यवहार करें।

कुछ लोग कहेंगे कि यह कैसे संभव हो सकता है ? अपने विरोधी को कौन चाहता है ? जी नहीं, ऐसी बात नहीं है। हमारे सामने ऐसी दस-बीस नहीं, सैकड़ों मिसालें हैं, जबकि लोगों ने अपने से मतभेद रखने वालों से प्रेम किया और उन्हें जीतकर अपनी ओर कर लिया। दूर क्यों जायें, हमारे सामने महात्मा गांधी की मिसाल है। दक्षिण अफ्रीका में जिस मीरकासिम ने उन्हें लातों से मारा

और उन पर लाठियां बरसाई उसी पर गांधीजी ने प्रेम की वर्षा की। उस पर मुकदमा चलाने से इनकार कर दिया। इतना ही नहीं उसे छोड़ देने का अधिकारियों से अनुरोध किया।

ऐसे प्रेम को प्रेम कहते हैं और जो आदमी ऐसा प्रेम करना जानता है, वह मानों हर घड़ी सुख के सागर में गोते लगाता रहता है।

हजरत मुहम्मद के जीवन की एक घटना है। उनसे एक बुढ़िया बहुत चिढ़ा करती थी। जब कभी वह गली से निकलते थे, वह उनके सिर पर कूड़ा डाल देती थी। हजरत मुहम्मद हंस देते थे। एक दिन जब वह उधर से निकले तो देखते क्या हैं कि उनके ऊपर कूड़ा नहीं गिरा।

उन्होंने सोचा, कहीं बुढ़िया बीमार तो नहीं हो गई। लौटकर वह उसके घर गये तो सचमुच बुढ़िया बीमार पड़ी थी। वह उन्हें देखते ही कांप गई। उसे डर लगा कि रोज-रोज के अपमान का कहीं वह बदला न चुका लें। पर हजरत मुहम्मद ने बड़े प्यार से उसकी सेवा की और जब तक वह पूरी तरह अच्छी नहीं हो गई तब तक उसके पास ही रहे। बुढ़िया बहुत लज्जित हुई और अपने किये पर पछताई।

प्रेम की बड़ी शक्ति है, बड़ी महिमा है। उससे वह काम हो जाता है, जो बड़ी-बड़ी फौजें नहीं कर सकतीं, तोप गोले नहीं कर सकते, कानून नहीं कर सकता।

आचार्य विनोबा का नाम सब जानते हैं। एक दिन वह तैलंगाना जिले के पोचमपल्ली गांव में ठहरे थे। वहां के लोगों ने उनसे कुछ जमीन की मांग की। उसी दिन शाम को विनोबाजी ने बड़े प्रेम से वह बात अपनी प्रार्थना-सभा में कह दी। उनका कहना था कि एक आदमी उठकर खड़े हो गये और उन्होंने अस्सी एकड़ भूमि दान में दे दी। यह मामूली बात नहीं थी। भूमि के साथ आदमी का गहरा नाता होता है। महाभारत में कौरवों ने कह दिया था कि हम सुई के बराबर भी जमीन नहीं देंगे; पर विनोबाजी के जरा-सा कहने पर अस्सी एकड़ भूमि मिल गई। उसके बाद तो विनोबाजी ने जो किया, उसकी मिसाल दुनिया में मुश्किल से मिलेगी। ग्यारह बरस तक वह घूम-घूमकर लोगों को प्रेम का संदेश देते रहे। उनकी भाषा देखिये। वह कहते हैं, "तुम्हारे पांच बच्चे हैं। छठा मुझे मान लीजिये और मेरा हिस्सा मुझे दे दीजिये।" उनके पास बाहरी ताकत नहीं थी। पर प्रेम के जोर पर उन्होंने लाखों एकड़ भूमि इकट्ठी कर ली। लोगों ने गांव-के-गांव उन्हें अर्पित कर दिये। उनके लिए हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, पारसी, जैन, बौद्ध, सब एक-से थे, उनके लिए सब दल अपने थे। यहीं कारण है कि उनके काम में सब हाथ बंटा रहे थे। जाने कितने लोगों ने उनके साथ हजारों मील की पैदल यात्रा की है। न धूप का विचार किया है, न पहाड़ों की चढ़ाई का। यह सब प्रेम का चमत्कार है।

ईसा ने कहा है, "अपने पड़ोसी को उतना ही प्रेम

करो, जितना तुम अपने को करते हो।"

इस दुनिया को बांधनेवाली यदि कोई शक्ति है तो वह प्रेम है। प्रेम की डोर टूट जाय तो सारी दुनिया बिखर जाय।

किसी ने ठीक ही कहा है; "जीवन एक फूल है, प्रेम उसका मधु है।"

जिनके जीवन में प्रेम नहीं होता है, वे सदा दुःखी रहते हैं। उन्हें हर कोई अपना दुश्मन दिखाई देता है और वे सबसे डरते रहते हैं। पर जिनके हृदय में प्रेम है, उसे सब अपने ही दिखाई देते हैं और वह अपने को बड़ा शक्तिशाली अनुभव करता है।

संसार में जितने महापुरुष हुए हैं, उनके प्रेम की सीमा नहीं रही। उन्होंने बांहें फैलाकर सबका स्वागत किया है। वे बड़े बने हैं इसलिए कि उन्होंने सबको प्रेम दिया है और सबका प्रेम पाया है।

कबीर ने कहा है :

ढाई आखर प्रेम के पढ़े सो पंडित होय।

जो प्रेम को जानता है, उससे बड़ा विद्वान् कौन हो सकता है!

दुनिया में भांति-भांति के लोग हैं, उनका धर्म अलग है, उनका रंग अलग है, उनकी भाषा अलग है। उनके बीच एक कड़ी है, जो उन्हें जोड़े रखती है और वह कड़ी प्रेम की है। प्रेम की भाषा सबकी समझ में आ जाती है, यहां तक की पशु भी उसे समझ लेते हैं।

आप कहेंगे कि प्रेम में बड़ा बल है। यह हम जानते हैं, लेकिन सबको प्रेम किया कैसे जा सकता है? अपने को कोई बुरा-भला कहे, मारे, उसे प्रेम कैसे किया जा सकता है?

आप जो कहते हैं, आज दुनिया में वही दिखाई देता है। अपने विरोधी अथवा दुश्मन को हम प्रेम नहीं करते। पर आदमी की कसौटी यहीं पर होती है। प्रेम सौदा नहीं है। वह दावा नहीं करता। वह तो देता है, लेता नहीं।

पेड़ को देखो। लोग उसके पत्थर मारते हैं। इससे वह नाराज नहीं होता घृणा नहीं करता। वह तो बदले में मीठे-मीठे फल देता है।

ऐसा प्रेम करना खांडे की धार पर चलने के समान है। ईसा ने सबको प्रेम किया। उन्हें सूली पर चढ़ाया गया। सुकरात को विष का प्याला पीना पड़ा। गांधी को गोलियां खानी पड़ीं। ऐसे और भी बहुत-से दृष्टान्त हमें दुनिया में मिलते हैं। इन महापुरुषों की पार्थिव काया चली गई। वह तो एक-न-एक दिन सबकी ही जाती है, पर आज इन महा-पुरुषों का नाम बच्चे-बच्चे की जबान पर है। उनके प्रेम ने उन्हें अमर कर दिया। उनके प्रेम ने उन्हें मानवता का लाडला बना दिया। जब तक मानवता जीवित है, उनका नाम अमर रहेगा।

जिनका हृदय इतना खुला है कि उनके प्रेम में सब कुछ समा जाता है, उनके सुख की कौन कल्पना कर सकता है। □

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
शफीक मेमोरियल
17-बी इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नई दिल्ली-110002